5

संचार माध्यम के नवीनतम रूप

संचार माध्यम जनसंचार का महत्त्वपूर्ण स्रोत है। संचार माध्यम शब्द संचार और माध्यम शब्दों के योग से बना है। संचार से अभिप्राय संप्रेषण की संपूर्ण प्रक्रिया से है। संचार शब्द अंग्रेज़ी के *कम्यूनिकेशन* शब्द का पर्याय है। यह मानव समाज की वह संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसमें उद्देश्यपूर्ण और सार्थक अनुभवों, व्यवहारों और आवश्यकताओं का परस्पर आदान-प्रदान होता है। इसमें निश्चित लक्ष्य निहित होता है जो व्यक्ति के व्यवहार को परिमार्जित तथा प्रभावित करता है। इस प्रकार संचार माध्यम दो बिंदुओं को जोड़नेवाला साधन है। इससे संप्रेषक और श्रोता के बीच सूचनाओं का परस्पर आदान-प्रदान होता है।

प्राचीन काल से मानव ज्ञान का विकास होता रहा है। साथ ही जीवन को सहज, सुलभ, आरामदायक बनाने के लिए नए-नए संसाधनों की खोज होती रही है। पाषाण सभ्यता से प्रारंभ होकर मानव की वैचारिक यात्रा आज तकनीकी युग तक पहुँच गई है। इस प्रकार युग के विकास के साथ-साथ संचार माध्यमों में अभूतपूर्व परिवर्तन आया है। यहाँ डाक प्रणाली, मुद्रण माध्यम और इलैक्ट्रॉनिक माध्यम भारत की आधुनिक प्रणालियाँ हैं। इनके नवीनतम रूपों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है।

कंप्यूटर

कंप्यूटर को दिमाग का मशीनी रूप भी कह सकते हैं। कंप्यूटर का मतलब होता है गणना करना। कंप्यूटर का प्रारंभिक रूप मूलत: गणना करने वाली मशीन

के रूप में था। लेकिन अब इसमें प्रयुक्त किए जाने वाले शब्दों, आँकड़ों, संख्याओं और चित्रों की सूचनाओं को उसके स्मृति कोश में संचित किया जाता है और इस प्रकार यह अपने आधुनिक रूप में जटिल से जटिल काम कर सकता है। कंप्यूटर की सबसे बड़ी क्षमता है तेज़ गति से कार्य करना और उसमें निश्चितता लाना। आमतौर पर हम जिन कंप्यूटरों को देखते हैं उन्हें पी.सी. यानी पर्सनल कंप्यूटर कहा जाता है। अब ये छोटे-छोटे रूप में भी सामने आने लगे हैं। *लैपटॉप* यानी ऐसा छोटा सा कंप्यूटर जिसे आप साथ लेकर कहीं भी जा सकते हैं और अपनी गोद यानी *लैप* पर रखकर काम कर सकते हैं। *पामटॉप* कंप्यूटर इससे भी छोटा होता है और इसे आप अपनी हथेली यानी *पाम* पर रख कर काम कर सकते हैं। *पामटॉप* में हालांकि पी.सी. जितने फ़ीचर नहीं होते हैं, लेकिन इनका और विकास जारी है।

सॉफ़्टवेयर और हार्डवेयर

सॉफ़्टवेयर और हार्डवेयर बहुत प्रचलित शब्द है। ये दोनों कंप्यूटर के अभिन्न अंग हैं। हार्डवेयर का मतलब हम मशीन से लगा सकते हैं जिसमें मानीटर, कुंजीपटल, केंद्रीय संसाधन एकक, माउस और मुद्रक शामिल हैं। सॉफ़्टवेयर कई तरह के प्रोग्रामों का सेट होता है जो कंप्यूटर को काम करने के योग्य बनाते हैं। वास्तव में कंप्यूटरों की स्मृति में आँकड़े और प्रोग्रामों को संचित किया जा सकता है। प्रोग्राम एक विशिष्ट क्रम में ज़रूरी आदेशों की पूरी ृंखला है। विशेष प्रकार के कार्यों को संपन्न करने के लिए विकसित प्रोग्राम ही सॉफ़्टवेयर हैं। सॉफ़्टवेयर मुख्यत: दो तरह के होते हैं जिनकी मदद से हम कंप्यूटर को कमांड देकर अपनी मर्ज़ी से काम ले पाते हैं – (1) सिस्टम सॉफ़्टवेयर और (2) एप्लीकेशन साफ़्टवेयर। सिस्टम साफ़्टवेयर का संबंध डॉस, विंडोज़, यूनिक्स आदि प्रणाली से है। इनमें फोर्टान, कोबोल, बेसिक, पास्कल आदि में प्रोग्राम तैयार किए जाते हैं। प्रयोग की प्रकृति के आधार पर पुस्तक प्रकाशन, शब्द संसाधन, आँकड़ा संसाधन आदि महत्त्वपूर्ण कार्यों का अनुप्रयोग एप्लीकेशन सॉफ़्टवेयर में होता है।

फ़्लॉपी

कंप्यूटर में हम डाटा यानी आँकड़े एकत्र करते हैं या उन पर काम करते हैं। फ़्लॉपी डिस्क इन आँकड़ों और सूचनाओं को एकत्र करने का काम करती है। एक तरह से हम इसे *डिजिटल फ़ाइल* भी कह सकते हैं। यह बाज़ार में बहुत सस्ती मिल जाती है। एक कंप्यूटर से आँकड़े इसमें स्टोर कर हम दूसरे कंप्यूटर में ले जाकर देख सकते हैं।

सीडी रोम

इसका पूरा नाम काम्पैक्ट डिस्क-रोम ओनली मेमोरी होता है। काम्पैक्ट डिस्क नाम से ही स्पष्ट होता है कि इसमें काफ़ी अधिक सूचना एकत्र की जा सकती है। इस छोटी डिस्क के नाम में रीड ओनली मेमोरी भी जुड़ा है। इसका मतलब है कि इसमें एकत्र सूचना को कंप्यूटर पर सिर्फ़ पढ़ा जा सकता है। फ़्लॉपी की तरह इसमें आप अपने कंप्यूटर से सूचना एकत्र नहीं कर सकते हैं। लगभग दो दशक पहले जब पहली बार इन्हें बनाया गया था तो इनका आकार 12 इंच हुआ करता था लेकिन अब यह 12 सेमी की छोटी डिस्क होती है।

इंटरनेट

आज के युग को इंटरनेट युग कहा जाता है और इसकी वजह से सूचना के आदान-प्रदान ने क्रांतिकारी रूप ले लिया है। यह दुनिया भर में फैले कंप्यूटरों को जोड़कर बनाया गया नेटवर्क है। इस नेटवर्क को तैयार करने के काम में सैटेलाइट, ऑप्टिक फ़ाइबर, टेलीफ़ोन लाइन आदि की मदद ली गई है। इंटरनेट खुद एक तरह की दुनिया है जहाँ हर मसले पर सूचना उपलब्ध है। लेकिन इस पर किसी तरह का सरकारी नियंत्रण और भौगोलिक सीमाओं का दबाव नहीं है। इंटरनेट तक पहुँचने के लिए कुछ समय पहले तक हम कंप्यूटरों का ही सहारा लेते थे, लेकिन अब तकनीकी क्रांति के साथ मोबाइल फ़ोन, टेलीविजन जैसे उपकरणों पर भी इंटरनेट एक्सेस किया जा सकता है। इंटरनेट ने सूचना

हासिल करना और भेजना इतना आसान बना दिया है कि इंटरनेट क्रांति को सूचना तकनीक क्रांति भी कहा जाने लगा है।

इंट्रानेट

इंटरनेट आपस में जुड़े कंप्यूटरों का विश्वव्यापी जाल है तो इंट्रानेट इसका छोटा रूप है। सरकार और कंपनियों के विभिन्न ऑफिसों का जो आपसी नेटवर्क होता है उसे इंट्रानेट भी कह सकते हैं। इंटरनेट को कोई भी एक्सेस कर सकता है वहीं इंट्रानेट किसी खास संस्थान की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ही होता है।

डब्लूडब्लूडब्लू

इसका मतलब होता है *वर्ल्ड वाइड वेब* यानी दुनिया भर में फैला जाल। इंटरनेट पर यह हमें अपनी पसंद की साइट तक पहुँचाता है। इस समय इंटरनेट पर हज़ारों वेब सर्वर हैं। वेब पेज पर सूचनाएँ मल्टीमीडिया रूप में होती हैं, यानी कि इसमें हम चीज़ें पढ़ सकते हैं,सजीव चित्र देख सकते हैं और आवाज़ भी सुन सकते हैं। *वर्ल्ड वाइड वेब* और इंटरनेट को सामान्यत: हम एक ही मान लेते हैं लेकिन इंटरनेट कई तरह *वर्ल्ड वाइड वेब* का मिला-जुला रूप है और अधिक व्यापक है।

ई-मेल

पत्र भेजने का इलैक्ट्रॉनिक तरीका। सबसे विशेष बात यह है कि आपका संदेश पलक झपकते ही दुनिया में कहीं भी पहुँच जाता है। इंटरनेट को दुनिया भर में लोकप्रिय बनाने में ई-मेल का सबसे अधिक योगदान रहा है और इंटरनेट सर्फ़िंग करने वाले अधिकतर लोग ई-मेल का इस्तेमाल करते हैं। कई वेब साइटें मुफ़्त ई-मेल सेवा पेश करती हैं। इसके अंतर्गत आप अपनी एक ई-मेल पहचान बनाते हैं और उस खास साइट पर आपके पते यानि पहचान पर संदेश भेजा जा सकता है। विश्व में कहीं से और किसी भी कंप्यूटर से इंटरनेट तक पहुँच कर आप ई-मेल भेज और प्राप्त कर सकते हैं। ई-मेल के साथ आप चित्र और आवाज़

वाली फाइलें भी भेज सकते हैं। रोज़ाना के काम-काज के अलावा बिज़नेस संबंधी कार्यों में भी ई-मेल का महत्त्व बढ़ गया है।

एचटीएमएल

एचटीएमएल का मतलब होता है *हायपर टेक्स्ट मार्कअप लैंगुएज*। *वर्ल्ड वाइड वेब* पर डाटा पेश करने के लिए इस कंप्यूटरी ज़ुबान का इस्तेमाल किया जाता है।

एचटीटीपी

एचटीटीपी का अर्थात *हाइपर टेक्स्ट ट्रांसफर प्रोटोकॉल*। *वर्ल्ड वाइड वेब* से डॉक्यूमेंट मँगाने या भेजने के लिए इस सिस्टम का इस्तेमाल होता है। इसे भी वेब साइट के पते में 222 से पहले लिखा जाता है।

ऑपरेटिंग सिस्टम

यह दरअसल एक ऐसा प्लेटफॉर्म होता है जो आपके कंप्यूटर पर विभिन्न सॉफ्टवेयर और प्रोग्राम चलाने में मदद करता है।

ब्राउज़र

यह ऐसा सॉफ़्टवेयर है जो कि *वर्ल्ड वाइड वेब* तक पहुँचने में मदद करता है। नेटस्केप नेवीगेटर एक्सप्लोरर इसके प्रमुख उदाहरण हैं। जब हम अपने कंप्यूटर पर ब्राउसर के चिह्न पर क्लिक करते हैं तो इंटरनेट से जुड़ जाते हैं।

सर्च इंजन

इंटरनेट सूचना का सागर है, लेकिन इस सागर में से मनमाफिक जानकारी ढूँढ़ना कठिन काम हो सकता है। लेकिन सर्च इंजन नाम की सुविधा इस काम को आसान बना देती है। लगभग सभी वेबसाइटों में सर्च इंजनों की सुविधा होती है लेकिन कुछ ऐसी खास वेबसाइट भी हैं जो सर्च इंजन का काम करती हैं, जिनमें गूगल, लाइकोस और आस्क प्रमुख हैं। सर्च इंजन में आपको जिस बारे में

जानकारी चाहिए उससे संबंधित शब्द लिखने होते हैं और वह पलक झपकते ही *वर्ल्ड वाइड वेब* से सारी जानकारी खोज लाता है।

ई-कॉमर्स

इसका मतलब है इलैक्ट्रॉनिक कामर्स (वाणिज्य)। इंटरनेट की मदद से कंप्यूटर के सामने बैठे-बैठे ही कारोबार करना संभव हो गया है। इसमें अब तक सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि पैसे का भुगतान किस तरह किया जाए। लेकिन क्रेडिट कार्ड और डिजिटल हस्ताक्षर नाम की तकनीक से इसे अब संभव कर दिया गया है। ई-कॉमर्स दो तरह का होता है — बी2बी यानी *बिज़नेस टु बिज़नेस*। इसके अंतर्गत दो कंपनियाँ आपस में कारोबार करती हैं। बी2सी का मतलब होता है *बिज़नेस टु कस्टमर*। इसके तहत कंपनियाँ इंटरनेट के ज़रिए आम लोगों को सामान बेचती हैं।

ब्रॉडबैंड

इसके द्वारा हम बहुत तेज़ी से इंटरनेट एक्सेस कर सकेंगे। डिजिटल और फ़ाइबर ऑप्टिक की मदद से ब्रॉडबैंड का सपना पूरा हो पाएगा। समूचे विश्व में इस समय इस दिशा में काम हो रहा है इसका सबसे बड़ा लाभ यह है कि इंटरनेट से आने वाली सूचना को अधिक तेज़ी से कंप्यूटर या फिर अन्य मशीनों पर हासिल किया जा सकेगा। विशेष रूप से चित्रों और आवाज़ वाली फ़ाइलों को अभी इंटरनेट से कंप्यूटर पर लेने में बहुत समय लग जाता है लेकिन ब्राडबैंड इस काम को आसान बना देगा।

बैंडविड्थ

यह किसी नेटवर्क कनेक्शन की क्षमता होती है। इस क्षमता से पता चलता है कि उस नेटवर्क में डाटा का प्रवाह कितनी गति से हो रहा है। जितनी अधिक बैंडविड्थ होगी इंटरनेट आदि से डाउनलोड भी उतनी ही तेज़ी से किया जा सकेगा।

वायरस

यह एक तरह घुसपैठिया कंप्यूटर प्रोग्राम होता है जो नेटवर्क या फिर कंप्यूटर पर आकर ऑपरेटिंग सिस्टम को तबाह कर देता है। यह टेलीफ़ोन लाइन या

फिर फ़्लॉपी या डिस्क के ज़रिए घुसपैठ करता है। आजकल ई-मेल के ज़रिए वायरस भेजे जाने लगे हैं। पिछले दिनों *आईलवयू* वायरस के ज़रिए कुछ हैकरों ने दुनिया भर के कंप्यूटर सिस्टमों को तबाह कर करोड़ों का नुकसान पहुँचाया था।

आईएसपी

इसका मतलब होता है *इंटरनेट सर्विस प्रोवाइडर*, यानी वह कंपनी जो इंटरनेट सेवा उपलब्ध कराती हैं। ये कंपनियाँ ऑप्टिक फ़ाइबर, टेलीफ़ोन लाइन या फिर केबल के ज़रिए अपनी सेवा उपलब्ध कराती हैं। अभी तक टेलीफ़ोन लाइन का तरीका अधिक प्रचलित था, लेकिन अब ऑप्टिक फ़ाइबर और केबल के ज़रिए इंटरनेट सेवा उपलब्ध कराने लगे हैं। इस सेवा के लिए आईएसपी प्रति घंटे के हिसाब से पैसे लेते हैं लेकिन कई आईएसपी ने फ्री सेवा भी शुरू की है, उनकी आय के स्रोत इंटरनेट सेवा के साथ आने वाले विज्ञापन होते हैं।

एएसपी

इसका मतलब होता है *एप्लिकेशन सर्विस प्रोवाइडर* यानी ये इंटरनेट और उससे जुड़े कारोबार की ज़रूरतों के अनुरूप सॉफ़्टवेयर आदि तैयार करते हैं। ई-कॉमर्स की दुनिया में इनकी ज़रूरत रोज़ बढ़ती जा रही है।

3जी और 4जी फ़ोन

आजकल जिन मोबाइल फ़ोन का इस्तेमाल हो रहा है वह दूसरी पीढ़ी का है। लेकिन अब तीसरी और चौथी पीढ़ी के मोबाइल फ़ोन विकसित करने की दिशा में काम होने लगा है। इन सेलफ़ोन की विशेषता यह है कि उनमें हम पी.सी. की ही तरह इंटरनेट देख सकेंगे, मल्टीमीडिया संदेश भेजना आसान हो जाएगा और सूचना भेजने की रफ़्तार बहुत तेज़ हो जाएगी।

वैप

वायरलेस एक्सेस प्रोटोकॉल वह तकनीक है जिनसे हम मोबाइल उपकरणों पर इंटरनेट देख सकते हैं। इन मोबाइल उपकरणों में सेलफ़ोन, पामटॉप, डिजिटल

डायरी आदि शामिल हैं। अभी वैप की मदद से हम सिर्फ़ टेक्स्ट इंटरनेट यानी बिना चित्रों वाला इंटरनेट देख पाते हैं।

एसएमएस और ईएमएस

जिस तरह इंटरनेट पर ई-मेल के ज़रिए संदेश भेजते हैं उसी तरह मोबाइल फ़ोन से छोटे-छोटे लिखित संदेश भी किसी दूसरे मोबाइल फ़ोन पर भेजे जा सकते हैं। इन संदेशों को एसएमएस यानी शॉर्ट मैसेज सर्विस कहते हैं। दुनिया भर में एसएमएस काफ़ी लोकप्रिय हैं, लेकिन इनके आकार की सीमा निर्धारित होती है। इसके अधिक करने के लिए एक्सटेंडेड मैसेज सर्विस यानी ईएमएस विकसित करने पर काम हो रहा है जिससे लंबे संदेश (जिनमें चित्र और संगीत वाली फाइल शामिल होंगी) भेजे जा सकेंगे।

इंटरनेट टेलीफ़ोनी

इंटरनेट की दुनिया की अगली क्रांति इंटरनेट टेलीफ़ोनी होगी। इसके ज़रिए इंटरनेट का इस्तेमाल टेलीफ़ोन की तरह किया जा सकेगा। इससे टेलीफ़ोन कॉल पर आने वाला भारी खर्च भी बच जाएगा। कुछ पश्चिमी देशों में तो इनका प्रचलन लोकप्रिय भी हो गया है। इसमें वॉयस ऑन इंटरनेट तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है। कई देशों में परंपरागत टेलीफ़ोन कंपनियों ने इसके खतरे को भाँपते हुए इसे रोकने की कोशिश भी की, लेकिन वे असफल रही हैं।

सर्वर

यह किसी नेटवर्क का ऐसा कंप्यूटर होता है जो कि सारे नेटवर्क के लिए किसी एक खास काम की ज़िम्मेदारी संभालता है। उदाहरण के लिए अगर किसी नेटवर्क में प्रिंट सर्वर है तो वह नेटवर्क के सभी कंप्यूटरों के प्रिंट निकालने संबंधी काम की देखरेख करेगा।

फ़ैक्स

इसे फ़ैक्सीमाइल भी कहते हैं। यह रेडियो तरंगों या फिर टेलीफ़ोन लाइनों से लिखित जानकारी को एक जगह से दूसरी जगह भेजना और उसे उसी स्वरूप

में हासिल करना संभव बनाता है। साधारण फ़ैक्स मशीन से जब सूचना भेजी जाती है तो वह उसकी लिखित और ग्राफ़िक जानकारी को स्कैन कर लेती है और टेलीफ़ोन नेटवर्क से दूसरी फ़ैक्स मशीन तक भेज देती है, जहाँ उसे उसके मूल स्वरूप में हासिल कर लिया जाता है। इंटरनेट और सूचना क्रांति के आने के बाद इंटरनेट से भी फ़ैक्स भेजना संभव हो गया है। यहाँ तक मोबाइल फ़ोन पर भी आप फ़ैक्स हासिल कर सकते हैं।

मोडेम

डिजिटल डाटा भेजने के लिए मोडेम का इस्तेमाल किया जाता है। जब हम किसी कंप्यूटर को टेलीफ़ोन लाइन के ज़रिए इंटरनेट से जोड़ते हैं तो वहाँ भी यह काम मोडेम ही करता है। यह डिजिटल डाटा को एनालॉग सिगनल में बदल कर तरंगों के रूप में भेजता है।

प्रश्न-अभ्यास

1. नवीनतम इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों के विकास से सूचना और संचार क्षेत्र में एक नई क्रांति आ गई है, कैसे?
2. कंप्यूटर को मानव मस्तिष्क का मशीनी रूप क्यों कहा जाता है?
3. आज के युग को इंटरनेट युग क्यों कहा जाता है?
4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए –
   - ❑ इंट्रानेट
   - ❑ डब्लूडब्लूडब्लू
   - ❑ ई-मेल
   - ❑ फ़ैक्स

परिशिष्ट
जनसंचार माध्यमों की शब्दावली

❑ प्रेस शब्द-सूची

ए. बी. सी. (A.B.C.)	ऑडिट ब्यूरो ऑफ सर्कुलेशन। यह संस्था समाचार पत्रों की प्रसार संख्या की जाँच करती है। इसके द्वारा घोषित प्रसार संख्या को प्रामाणिक माना जाता है।
ऐड (ad)	ऐडवरटाइज़मेंट, विज्ञापन के लिए संक्षिप्त रूप से ऐड शब्द का प्रयोग किया जाता है।
एडवांस (Advance)	हिंदी में इसके लिए 'अग्रिम' शब्द का प्रयोग किया जाता है। ऐसी सामग्री जो निर्धारित समय से पहले ही छपने के लिए आ जाए उसे **अग्रिम** कहते हैं। प्रमुख व्यक्तियों के भाषण आदि पहले ही अखबारों को भेज दिए जाते हैं।
ऑल इन हैंड (All in hand)	इस पद का प्रयोग तब किया जाता है जब किसी संस्करण की सारी सामग्री छपने के लिए चली जाती है। हिंदी में इसके लिए **प्रेषित** का प्रयोग करते हैं।
ए. पी. (A.P.)	यह एक विख्यात संवाद समिति *एसोसिएटेड प्रेस* का संक्षिप्त रूप है।
एसाइनमेंट (Assignment)	संपादक, ब्यूरो चीफ़ या मुख्य संवाददाता की ओर से संवाददाताओं को खबर लाने के लिए जो निर्देश दिए जाते हैं उसे एसाइनमेंट कहते हैं।

एक्सक्लूसिव (Exclusive)	किसी अखबार में छपा वह विशेष समाचार जो कहीं और न छपा हो।
बी.एफ. (B.F.)	बोल्ड फेस। इसका अर्थ होता है मोटे या अधिक काले प्रभाव वाला टाइप।
बैलून (Balloon)	व्यंग्य-चित्रों में पात्रों के संवाद उनके मुँह के पास एक गोल घेरे में लिखे जाते हैं। इस घेरे को ही बैलून कहते हैं।
बैनर (Banner)	अखबार के पहले पन्ने पर अत्यंत महत्त्वपूर्ण **लीड** के शीर्षक को सभी कालमों में फैलाकर छापते हैं तो उसे बैनर कहते हैं। झंडे की तरह बैनर शीर्षक महत्त्वपूर्ण खबर का एक प्रकार से विज्ञापन करता है।
बीट (Beat)	संवाददाताओं के समाचार-संकलन के क्षेत्र को बीट कहते हैं। जैसे नगर निगम, अलग-अलग मंत्रालय तथा अस्पताल।
बॉक्स (Box)	छोटे रोचक समाचार जो चारों ओर से रूल के द्वारा घिरे होते हैं।
ब्रेक (Break)	किसी महत्त्वपूर्ण समाचार को सामने लाना।
ब्रीफ (Brief)	संक्षिप्त समाचारों के लिए इस शब्द का प्रयोग होता है।
बाई लाइन (By line)	खबर के ऊपर लिखा जानेवाला संवाददाता का नाम।
ब्यूरो (Bureau)	विशेष संवाददाताओं के विभाग को ब्यूरो कहते हैं।

कैप्शन (Caption)	तस्वीर के नीचे लिखे गए चित्र-परिचय को कैप्शन कहते हैं।
कालम (Column)	अखबारों के पृष्ठ छह या आठ हिस्सों में लंबवत बँटे होते हैं। इनमें से प्रत्येक हिस्से को कालम कहते हैं।
किल (Kill)	कंपोज की हुई सामग्री को नष्ट करना।
कैरी ओवर (Carry Over)	समाचार के बचे हुए हिस्से को दूसरे पन्ने पर ले जाना।
कॉलमिस्ट (Columnist)	स्तंभ लेखक, समाचार पत्र के अंदर विशेष स्तंभ में नियमित रूप से लिखनेवाला लेखक।
कॉपी (Copy)	आलेख की पांडुलिपि को ही कॉपी कहते हैं।
क्रेडिट लाइन (Credit line)	वह पंक्ति जिससे समाचार का स्रोत बताया जाता है। जैसे प्रे.ट्र., भाषा और वार्ता।
क्रीड (Creed)	टेलीप्रिंटर मशीन पर समाचार भेजने को क्रीड करना कहते हैं।
क्रॉप (Crop)	चित्र को काट-छाँट कर संपादित करने का काम क्रॉप कहलाता है
डेट लाइन (Date line)	तिथि रेखा, खबर के शुरू मे स्थान, दिनांक और महीने के उल्लेख को डेट लाइन कहते हैं।
डेड लाइन (Dead line)	प्रेस में खबर भेजने की अंतिम अवधि को डेड लाइन कहते हैं।

❑ रेडियो और टेलीविजन शब्द-सूची

फ़ेड आउट : जब रेडियो पर कोई ध्वनि धीरे-धीरे समाप्त होती है तो इस प्रक्रिया को फ़ेड आउट कहते हैं। टेलीविजन में दृश्य के धीरे-धीरे हटने की प्रक्रिया को भी फ़ेड आउट कहते हैं।

फ़ेड इन : रेडियो पर कोई ध्वनि जब धीरे-धीरे उभरकर आती है तो इसे फ़ेड इन कहते हैं। इसी प्रकार छवि का धीरे-धीरे पर्दे पर उभरना भी फ़ेड इन कहलाता है।

क्रॉस फ़ेड और डिज़ाल्व : जब रेडियो में एक आवाज़ जाती हुई और दूसरी आती हुई सुनाई जाती है। इस प्रक्रिया को क्रॉस फ़ेड कहते हैं। इस तकनीक को टेलीविजन में डिज़ाल्व कहते हैं। इसमें एक छवि पर्दे के पीछे डूबती हुई और दूसरी उगती हुई प्रतीत होती है।

वाइप : इस प्रविधि में एक तस्वीर दूसरी तस्वीर को पोंछ डालती है और टेलीविजन पर एक तस्वीर को छाँटकर दूसरी तस्वीर आ जाती है।

फ़्लैश-बैक : पुरानी चीज़ों या जीवन को याद करना फ़्लैश-बैक कहलाता है।

पैन : पैन एक प्रकार का विहंगावलोकन है। जिस प्रकार एक पक्षी ऊपर से काफ़ी दूर तक और विस्तार में देख सकता है वैसे ही कैमरा पैन करता हुआ कई दृश्य एक ही बार में दिखा देता है।